Q: 1835 में भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रारम्भ होने की परिस्थितियाँ;

Ans: — भारत में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा की सही शुरुआत 1835 ई० मैकाले के प्रसिद्ध उद्घोषणा के पश्चात् हुयी। इससे पूर्व भारत में प्राथमिक एवं उच्चशिक्षा का उचित प्रबंध था और भारत की प्राचीन परम्पराओं पर आधारित थी। प्रारम्भिक शिक्षा के विद्यालयों की संख्या बहुत बड़ी थी और वे सम्पूर्ण देश में फैले हुये थे। वे किसी वर्ग विशेष के लिए न होकर जनसाधारण की शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहे थे। अनेक ब्रिटिश उच्च पदाधिकारी और कर्मचारी भी विश्वास करते थे कि भारत में राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति का निर्माण देशी विद्यालयों की नींव पर किया जा सकता है। ऐडम ने लिखा कि देशी शिक्षा संस्थाओं अपने दीर्घकालीन अस्तित्व के कारण लोगों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का अंग बन गयी थी। देशी संस्थाओं के विकास की योजनाएँ मुनरो, ऐडम, एलफिंस्टन, थामसन, लेटनर जैसे अनेक प्रयासकों और शिक्षाविदों ने तैयार की थी।

चार्ल्स ग्रांट

1792 में चार्ल्स ग्रांट ने 'ऑब्जर्वेशन आन दी स्टेट आफ सोसायटी अमंग दि एशियाटिक सब्जेक्ट्स आफ ग्रेट ब्रिटेन' नामक पुस्तिका लिखी जिसमें उन्होंने भारतीयों को नैतिक दृष्टि से पतित बताया। उनके अनुसार भारतीय समाज की दयनीय दशा के दो कारण थे— अज्ञान और उपयुक्त धर्म का अभाव। अतः उसने भारतीयों को शिक्षित करने और ईसाई बनाने का समर्थन किया। शिक्षा प्रचार के लिए उसने अंग्रेजी भाषा को उपयुक्त माध्यम बताया। भारतीयों को अंग्रेजी साहित्य दर्शन और धर्म की शिक्षा देनी चाहिए। यदि अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार किया गया तो अनिवार्य रूप से भारतीय जनता ईसाई धर्म स्वीकार कर लेगी। वस्तुतः अंग्रेजी शिक्षा की (अग्रिम) रूपरेखा का निर्माण ग्रांट ने ही किया। अतः उसे भारत में आधुनिक शिक्षा का जन्मदाता कहा जाता है।

कई मिशनरियों ने अनेक अंग्रेजी विद्यालय स्थापित किये परन्तु उन्होंने समस्त जनता को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देना अव्यवहारिक समझा। उन्होंने केवल उन स्थानों में अंग्रेजी माध्यम से पश्चात् ज्ञान और अंग्रेजी साहित्य की शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जहाँ उन्हें सफलता प्राप्त करने की आशा थी। पूर्व कालिक मिशनरियों ने आधुनिक भारतीय भाषाओं के अध्ययन

को महत्व प्रदान किया, शब्दकोष तैयार किए व्याकरण पर पुस्तकें लिखीं बाइबिल का भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया और भारतीय भाषाओं में प्रथम पाठ्य पुस्तकों का संकलन किया। कुछ भारतीय एवं ब्रिटिश गणमान्य व्यक्तियों ने भारत में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा की वकालत की। इन व्यक्ति में अग्रणी थे राजा राममोहन राय। उन्होंने पाश्चात्य देशों के वैज्ञानिक और प्रजातांत्रिक विचारों से प्रभावित होकर अंग्रेजी शिक्षा का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि "अगर अंग्रेजी शासन का यह उद्देश्य होता कि भारतीयों को अज्ञान के अंधकार में रखा जाए तो संस्कृत शिक्षा प्रणाली को ही जारी रखा जाता।" उन्होंने सरकार के समक्ष प्रस्ताव रखा कि प्राच्य शिक्षा सम्बन्धी परियोजनाओं को त्यागकर उनके स्थान पर पाश्चात्य विज्ञान एवं साहित्य की अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जाए। उन्होंने प्राच्य विद्या और धर्म की निंदा भी की और व्याकरण भूगोल खगोल विज्ञान और ज्यामिति पर बंगला भाषा में पुस्तकों की रचना की। उन्होंने भारतीय भाषाओं के अध्ययन और विकास का समर्थन किया और उन्हें निकृष्ट नहीं बताया। उन्होंने अंग्रेजी तथा पाश्चात्य विज्ञान एवं साहित्य के अध्ययन से प्राच्य संस्कृति में सुधार तथा उसके पुनरुद्धार का समर्थन किया। उनके मित्र

डेविड हेयर

डेविड हेयर ने भी उनके विचारों का समर्थन किया और दोनों ने मिलकर 1817 में कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की जहाँ पर अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा को प्रमुखता प्राप्त हुयी।

इन लोगों ने ब्रिटिश सरकार का ध्यान आकृष्ट करते हुये कहा कि भारत के ऊपर अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन सिर्फ राजस्व की वसूली के लिए स्थापित नहीं की गयी है अपितु उसका कर्तव्य है कि भारत के लोगों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्वस्थ बनाना। इसके लिए अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी से आग्रह किया गया कि भारत के लोगों को आधुनिक ढंग से शिक्षित करने का दायित्व अपने हाथों में ले। 1813 ई० चार्टर अधिनियम के अनुसार कम्पनी ने पहली बार शिक्षा के प्रति सरकारी उत्तरदायित्व उठाया। प्रतिवर्ष शिक्षा के लिए एक लाख रुपए खर्च करने की व्यवस्था इस अधिनियम में की गयी लेकिन इस अधिनियम में कहा गया कि प्रतिवर्ष कम्पनी सरकार भारत में वैज्ञानिक

शिक्षा के लिए एक लाख रुपया खर्च करेगी लेकिन शीघ्र ही विवाद उठ खड़ा हुआ कि यह वैज्ञानिक शिक्षा किस भाषा के माध्यम से हो । तब तक इस विवाद का समाधान नहीं हुआ कम्पनी सरकार ने वैज्ञानिक शिक्षा के क्षेत्र में कोई पहल नहीं की प्राच्यवादी विचारों अधिकतर कम्पनी के पुराने बंगाली अधिकारी थे जो यह विचार व्यक्त किया कि

वारेन हेस्टिंग्स व मिन्टो की नीतियाँ

शिक्षा के सम्बन्ध में वारेन हेस्टिंग्स और मिन्टो की नीतियाँ निर्णायक थी । अर्थात् संस्कृत और अरबी के अध्ययन को प्रोत्साहन किया जाए और भारत में पाश्चात्य विज्ञान और ज्ञान का प्रसार इन्हीं भाषाओं के माध्यम से किया जाए । दूसरा दल काफी ही प्रभावशाली था जिसके नेता मुनरो और एलफिंस्टन थे । इनके

मुनरो एलफिंस्टन

अनुसार पाश्चात्य शिक्षा स्थानीय देशी भाषाओं के माध्यम से दी जानी चाहिए । वे विज्ञान की शिक्षा और विकास के विरोधी नहीं थे किन्तु उन्होंने यह व्यक्त प्रश्न की कि यूरोपीय ज्ञान और विज्ञान को देशी भाषा के माध्यम से पढ़ाया जाए जिससे भारतीय परिचित थे । उपयोगी पुस्तकों का अंग्रेजी से अरबी और संस्कृत में अनुवाद किया जाए । वे देशी उच्च शिक्षण संस्थाओं के संरक्षण का समर्थन कर रहे थे । प्राच्यवादियों में प्रिंसेप एच.

प्रिंसेप एच.एच. विल्सन

एच. विल्सन जैसे विद्वान भी प्रमुख थे । उन्होंने आधुनिकीकरण का विरोध नहीं किया, वस्तुतः वे एक ऐसी कड़ी थे जिन्होंने स्थानीय उच्चवर्ग को समकालीन यूरोप की उत्साहपूर्ण सभ्यता से परिचित कराया । वे भी ब्रिटिश साम्राज्यवाद के हिमायती थे और उनका यह मानना था कि यूरोपीय एवं खासकर ब्रिटिश सभ्यता एवं संस्कृति के विषय में भारत के लोग भारतीय भाषाओं के माध्यम से अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त कर सकते थे । ~~अतः~~ अतः उन्होंने अनुवाद पर अत्यधिक जोर दिया । उनके अनुसार भारत के लोगों को अंग्रेजी सीखने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता और अंग्रेजी का ज्ञान अत्यंत आवश्यक होने के कारण वे अंग्रेजी सभ्यता व संस्कृति का रसास्वादन अच्छी तरह से नहीं समझ सकते थे । दूसरी बात प्राच्यवादियों ने कूटनीतिक कारणों से भी इस नीति का समर्थन किया । संस्कृत अरबी एवं फारसी साहित्य पर आधारित शिक्षा देकर भारत को पूर्ववत जातियों एवं समाज में विभाजित रखा जा सकता था ।